॥ अथ श्री ललितात्रिशती स्तोत्रम् ॥

ककाररूपा कल्याणी कल्याणगुणशालिनी। कल्याणशैलनिलया कमनीया कलावती ॥ १ ॥

कमलाक्षी कल्मषघ्नी करुणामृत सागरा। कदम्बकाननावासा कदम्ब कुसुमप्रिया ॥ २ ॥

कन्दर्पविद्या कन्दर्प जनकापाङ्ग वीक्षणा। कर्पूरवीटी सौरभ्य कल्लोलित ककुप्तटा ॥ ३ ॥

कलिदोषहरा कंजलोचना कम्रविग्रहा। कर्मादि साक्षिणी कारयित्री कर्मफलप्रदा ॥ ४ ॥

एकाररूपा चैकाक्षर्येकानेकाक्षराकृतिः। एतत्तदित्यनिर्देश्या चैकानन्द चिदाकृतिः ॥ ५ ॥

एवमित्यागमाबोध्या चैकभक्ति मदर्चिता। एकाग्रचित्त निर्ध्याता चैषणा रहिताद्दृता ॥ ६ ॥

एलासुगंधिचिकुरा चैनः कूट विनाशिनी। एकभोगा चैकरसा चैकैश्वर्य प्रदायिनी ॥ ७ ॥

एकातपत्र साम्राज्य प्रदा चैकान्तपूजिता। एधमानप्रभा चैजदनेकजगदीश्वरी ॥ ८ ॥

एकवीरदि संसेव्या चैकप्राभव शालिनी। ईकाररूपा चेशित्री चेप्सितार्थ प्रदायिनी ॥ ९ ॥

ईदृगित्य विनिर्देश्या चेश्वरत्व विधायिनी। ईशानादि ब्रह्ममयी चेशित्वाद्यष्ट सिद्धिदा ॥ १० ॥

ईक्षित्रीक्षण सृष्टाण्ड कोटिरीश्वर वल्लभा। ईडिता चेश्वरार्धाङ्ग शरीरेशाधि देवता ॥ ११ ॥

ईश्वर प्रेरणकरी चेशताण्डव साक्षिणी। ईश्वरोत्सङ्ग निलया चेतिबाधा विनाशिनी ॥ १२ ॥

ईहाविराहिता चेश शक्ति रीषत् स्मितानना।लकाररूपा ललिता लक्ष्मी वाणी निषेविता ॥ १३ ॥

लाकिनी ललनारूपा लसद्दाडिम पाटला। ललन्तिकालसत्फाला ललाट नयनार्चिता ॥ १४ ॥

लक्षणोज्ज्वल दिव्याङ्गी लक्षकोटयण्ड नायिका।

लक्ष्यार्था लक्षणागम्या लब्धकामा लतातनुः ॥ १५ ॥

ललामराजदलिका लम्बिमुक्तालताञ्चिता। लम्बोदर प्रसूर्लभ्या लज्जाढ्या लयवर्जिता ॥ १६ ॥

ह्रींकार रूपा ह्रींकार निलया ह्रींपदप्रिया। ह्रींकार बीजा ह्रींकारमन्त्रा ह्रींकारलक्षणा ॥ १७ ॥

ह्रींकारजप सुप्रीता ह्रींमती ह्रींविभूषणा। ह्रींशीला ह्रींपदाराध्या ह्रींगर्भा ह्रींपदाभिधा ॥ १८ ॥

ह्रींकारवाच्या ह्रींकार पूज्या ह्रींकार पीठिका। ह्रींकारवेद्या ह्रींकारचिन्त्या ह्रीं ह्रींशरीरिणी ॥ १९ ॥

हकाररूपा हलधृत्पूजिता हरिणेक्षणा। हरप्रिया हराराध्या हरिब्रह्मेन्द्र वन्दिता ॥ २० ॥

हयारूढा सेवितांघ्रिर्हयमेध समर्चिता । हर्यक्षवाहना हंसवाहना हतदानवा ॥ २१ ॥
हत्यादिपापशमनी हरिदश्वादि सेविता । हस्तिकुम्भोत्तुङ्ग कुचा हस्तिकृत्ति प्रियांगना ॥ २२ ॥
हरिद्राकुंकुमा दिग्धा हर्यश्वाद्यमरार्चिता । हरिकेशसखी हादिविद्या हल्लामदालसा ॥ २३ ॥
सकाररूपा सर्वज्ञा सर्वेशी सर्वमङ्गला । सर्वकर्त्री सर्वभर्त्री सर्वहन्त्री सनातना ॥ २४ ॥
सर्वानवद्या सर्वाङ्ग सुन्दरी सर्वसाक्षिणी । सर्वात्मिका सर्वसौख्य दात्री सर्वविमोहिनी ॥ २५ ॥
सर्वाधारा सर्वगता सर्वावगुणवर्जिता । सर्वारुणा सर्वमाता सर्वभूषण भूषिता ॥ २६ ॥
ककारार्था कालहन्त्री कामेशी कामितार्थदा । कामसंजीविनी कल्या कठिनस्तन मण्डला ॥ २७ ॥
करभोरुः कलानाथ मुखी कचजिताम्भुदा । कटाक्षस्यन्दि करुणा कपालि प्राण नायिका ॥ २८ ॥
कारुण्य विग्रहा कान्ता कान्तिधूत जपावलिः । कलालापा कंबुकण्ठी करनिर्जित पल्लवा ॥ २९ ॥
कल्पवल्ली समभुजा कस्तूरी तिलकाञ्चिता । हकारार्था हंसगतिर्हाटकाभरणोज्ज्वला ॥ ३० ॥
हारहारि कुचाभोगा हाकिनी हल्यवर्जिता । हरित्पति समाराध्या हठात्कार हतासुरा ॥ ३१ ॥
हर्षप्रदा हविर्भोक्त्री हार्द सन्तमसापहा । हल्लीसलास्य सन्तुष्टा हंसमन्त्रार्थ रूपिणी ॥ ३२ ॥
हानोपादान निर्मुक्ता हर्षिणी हरिसोदरी । हाहाहूहू मुख स्तुत्या हानि वृद्धि विवर्जिता ॥ ३३ ॥
हय्यङ्गवीन हृदया हरिकोपारुणांशुका । लकाराख्या लतापूज्या लयस्थित्युद्भवेश्वरी ॥ ३४ ॥
लास्य दर्शन सन्तुष्टा लाभालाभ विवर्जिता ।
लङ्घ्येतराज्ञा लावण्य शालिनी लघु सिद्धिदा ॥ ३५ ॥
लाक्षारस सवर्णाभा लक्ष्मणाग्रज पूजिता । लभ्यतरा लब्ध भक्ति सुलभा लाङ्गलायुधा ॥ ३६ ॥
लग्नचामर हस्त श्रीशारदा परिवीजिता । लज्जापद समाराध्या लंपटा लकुलेश्वरी ॥ ३७ ॥
लब्धमाना लब्धरसा लब्ध संपत्समुन्नतिः ।
ह्रींकारिणी च ह्रींकरि ह्रींमध्या ह्रींशिखामणिः ॥ ३८ ॥
ह्रींकारकुण्डाग्नि शिखा ह्रींकार शशिचन्द्रिका । ह्रींकार भास्कररुचिर्ह्रींकारांभोद चञ्चला ॥ ३९ ॥
ह्रींकार कन्दाङ्कुरिका ह्रींकारैक परायणाम् । ह्रींकार दीर्घिकाहंसी ह्रींकारोद्यान केकिनी ॥ ४० ॥

ह्रींकारारण्य हरिणी ह्रींकारावाल वल्लरी । ह्रींकार पञ्जरशुकी ह्रींकाराङ्गण दीपिका ॥ ४१ ॥
ह्रींकार कन्दरा सिंही ह्रींकाराम्भोज भृङ्गिका । ह्रींकार सुमनो माध्वी ह्रींकार तरुमंजरी ॥ ४२ ॥
सकाराख्या समरसा सकलागम संस्तुता । सर्ववेदान्त तात्पर्यभूमिः सदसदाश्रया ॥ ४३ ॥
सकला सच्चिदानन्दा साध्या सद्गतिदायिनी । सनकादिमुनिध्येया सदाशिव कुटुम्बिनी ॥ ४४ ॥
सकालाधिष्ठान रूपा सत्यरूपा समाकृतिः । सर्वप्रपञ्च निर्मात्री समनाधिक वर्जिता ॥ ४५ ॥
सर्वोत्तुङ्गा संगहीना सगुणा सकलेश्वरी । ककारिणी काव्यलोला कामेश्वर मनोहरा ॥ ४६ ॥
कामेश्वरप्रणानाडी कामेशोत्सङ्ग वासिनी । कामेश्वरालिंगितांगी कमेश्वर सुखप्रदा ॥ ४७ ॥
कामेश्वर प्रणयिनी कामेश्वर विलासिनी । कामेश्वर तपः सिद्धिः कामेश्वर मनः प्रिया ॥ ४८ ॥
कामेश्वर प्राणनाथा कामेश्वर विमोहिनी । कामेश्वर ब्रह्मविद्या कामेश्वर गृहेश्वरी ॥ ४९ ॥
कामेश्वराह्लादकरी कामेश्वर महेश्वरी । कामेश्वरी कामकोटि निलया काङ्क्षितार्थदा ॥ ५० ॥
लकारिणी लब्धरूपा लब्धधीर्लब्ध वाञ्छिता । लब्धपाप मनोदूरा लब्धाहंकार दुर्गमा ॥ ५१ ॥
लब्धशक्तिर्लब्ध देहा लब्धैश्वर्य समुन्नतिः । लब्ध वृद्धिर्लब्ध लीला लब्धयौवन शालिनी ॥ ५२ ॥
लब्धातिशय सर्वाङ्ग सौन्दर्या लब्ध विभ्रमा । लब्धरागा लब्धपतिर्लब्ध नानागमस्थितिः ॥ ५३ ॥
लब्ध भोगा लब्ध सुखा लब्ध हर्षाभि पूजिता ।
ह्रींकार मूर्तिर्ह्रींण्कार सौधशृंग कपोतिका ॥ ५४ ॥
ह्रींकार दुग्धाब्धि सुधा ह्रींकार कमलेन्दिरा । ह्रींकारमणि दीपार्चिर्ह्रींकार तरुशारिका ॥ ५५ ॥
ह्रींकार पेटक मणिर्ह्रींकारदर्श बिम्बिता । ह्रींकार कोशासिलता ह्रींकारास्थान नर्तकी ॥ ५६ ॥
ह्रींकार शुक्तिका मुक्तामणिर्ह्रींकार बोधिता । ह्रींकारमय सौवर्णस्तम्भ विद्रुम पुत्रिका ॥ ५७ ॥
ह्रींकार वेदोपनिषद् ह्रींकाराध्वर दक्षिणा । ह्रींकार नन्दनाराम नवकल्पक वल्लरी ॥ ५८ ॥
ह्रींकार हिमवद्गङ्गा ह्रींकारार्णव कौस्तुभा । ह्रींकार मन्त्र सर्वस्वा ह्रींकारपर सौख्यदा ॥ ५९ ॥

॥ इति श्री ब्रह्माण्डपुराणे उत्तराखण्डे श्री हयग्रीवागस्त्यसंवादे
श्री ललितात्रिशती स्तोत्र कथनं संपूर्णम् ॥